जेरेमी बेंथम: (Jeremy Bentham)

परिचय (Introduction):

जेरेमी बेंथम (Jeremy Bentham) 18वीं-19वीं सदी के एक प्रमुख अंग्रेज दार्शनिक, न्यायविद् और समाज सुधारक थे। उन्हें उपयोगितावाद (Utilitarianism) के सिद्धांत के जनक के रूप में जाना जाता है।

उपयोगितावाद (Utilitarianism):

* बेंथम के अनुसार, "अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख" (The greatest happiness of the greatest number) ही नैतिकता का आधार होना चाहिए।

* उन्होंने सुख और दुख को मापने के लिए "सुखमापी" (Hedonic Calculus) नामक एक विधि का प्रस्ताव दिया।

* उनके अनुसार, किसी कार्य की नैतिकValue उसकी उपयोगिता पर निर्भर करती है, यानी वह कितना सुख उत्पन्न करता है और कितना दुख कम करता है।

कानून और न्याय (Law and Justice):

* बेंथम ने कानूनों में सुधार की वकालत की। उनका मानना था कि कानूनों का उद्देश्य भी अधिकतम सुख को बढ़ावा देना होना चाहिए।

* उन्होंने कठोर और अन्यायपूर्ण कानूनों की आलोचना की और उन्हें मानवीय और उपयोगी बनाने का सुझाव दिया।

* उन्होंने जेल सुधार और अपराधियों के पुनर्वास पर भी जोर दिया।

राजनीतिक दर्शन (Political Philosophy):

* बेंथम ने लोकतंत्र और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का समर्थन किया।

* उन्होंने सरकार को जनता के प्रति जवाबदेह बनाने की बात कही।

* उन्होंने मतदान के अधिकार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का समर्थन किया।

आर्थिक विचार (Economic Ideas):

* बेंथम ने मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था का समर्थन किया।
* उन्होंने व्यापार और उद्योग पर सरकारी नियंत्रण को कम करने की वकालत की।

सामाजिक सुधार (Social Reform):

* बेंथम ने शिक्षा, स्वास्थ्य और गरीबों के कल्याण के लिए काम किया।
* उन्होंने सामाजिक बुराइयों को दूर करने और सभी के लिए समान अवसर प्रदान करने की बात कही।

बेंथम का प्रभाव (Influence of Bentham):

बेंथम के विचारों का राजनीति, कानून, अर्थशास्त्र और समाज सुधार पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनके उपयोगितावाद के सिद्धांत ने कई सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों को प्रेरित किया।

आलोचना (Criticism):

बेंथम के विचारों की कुछ आलोचनाएं भी हुई हैं। कुछ आलोचकों का तर्क है कि सुख को मापना संभव नहीं है और उपयोगितावाद व्यक्तिगत अधिकारों की उपेक्षा कर सकता है।

निष्कर्ष (Conclusion):

जेरेमी बेंथम एक महत्वपूर्ण विचारक थे जिन्होंने उपयोगितावाद के सिद्धांत के माध्यम से समाज को बेहतर बनाने का प्रयास किया। उनके विचारों का आज भी प्रासंगिकता है।